

न्यायालय राजस्व मण्डल, म०प्र० ग्वालियर

समक्ष

एम०के०सिंह

सदस्य

निगरानी प्रकरण क्रमांक 1479-एक/2001 - विरुद्ध आदेश  
दिनांक 31.5.2001 - पारित द्वारा - अपर आयुक्त, चंबल  
संभाग, मुरैना - प्रकरण क्रमांक 228/1988-89 अपील

गोपाल पुत्र श्रीकिशन दास बैरागी  
निवासी नगरपालिका के सामने  
श्योपुर कलॉ , जिला श्योपुर कलॉ म०प्र०  
विरुद्ध

--- आवेदक

- 1- मंदिर श्री बालमुकुन्द स्थित कस्वा श्योपुर  
द्वारा किशन बाबू पुत्र नारायणदास बैरागी  
निवासी श्योपुर कलॉ , जिला श्योपुर कलॉ
- 2- शंकरदास (फोट) पुत्र रामचन्द्र दास बैरागी  
वारिस

- अ- श्रीमती कमलावाई पत्नि शंकरदास
- ब- मांगीलाल स- रामस्वरूप
- द- भरतलाल पुत्रगण स्व. शंकरदास

- 3- हरदेवा (फोट) पुत्र पुन्या गूजर  
वारिस

- 1- श्रीमती नटीवाई पत्नि हरदेवा
- 2- शंकरलाल 3- रामकल्याण
- 4- प्रभू 5- रमेश पुत्रगण हरदेवा
- 6- कु.रुकमणी 7- कु.पार्वती 8- कु. गोरा
- 9- कु. सावो पुत्रियो हरदेवा

- 4- रामकुमार पुत्र धन्नालाल गूजर  
सभी निवासी ग्राम माखनाखेड़ी  
तहसील एवं जिला श्योपुर कलॉ

---अनावेदकगण

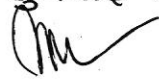
(आवेदक के अभिभाषक श्री मुकेश बेलापुरकर)  
(अनावेदक क्र-1 के अभिभाषक श्री एस0के0अवस्थी)  
(शेष अनावेदक सूचना उपरांत अनुपस्थित - एकपक्षीय)

आ दे श

(आज दिनांक 02-02-2016 को पारित)

यह निगरानी अपर आयुक्त, चंबल संभाग, मुरैना द्वारा प्रकरण क्रमांक 228/1988-89 अपील में पारित आदेश दिनांक 31.5.2001 के विरुद्ध मध्य प्रदेश भू राजस्व संहिता 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत हुई है।

2/ प्रकरण का सारोश यह है कि मंदिर श्री बालमुकुन्द जी कस्वा श्योपुर के नाम भूमि सर्वे क्रमांक 237 रकबा 71 बीघा ग्राम ज्वाड़ तहसील श्योपुर कलों में स्थित है जिसके प्रबन्धक कलेक्टर मुरैना वर्तमान में श्योपुर कलों हैं। इस मंदिर की 71 बीघा भूमि में से 26 बीघा 1 विसवा भूमि पर मृतक शंकरदास (वर्तमान में उसके उत्तराधिकारीगण) ने तथा 10 बीघा 1 विसवा भूमि पर मृतक हरदेवा (वर्तमान में उसके उत्तराधिकारीगण) ने एवं शेष रकबे पर मृतक हरदेवा (वर्तमान में उसके उत्तराधिकारीगण) , अनावेदक क्रमांक 4 एवं श्रीकिशन दास (आवेदक के पिता) ने अतिक्रमण कर लिया। मंदिर की पुजारी महिला मथुरी वाई पत्नि स्वर्गीय विहारीदास बैरागी ने तहसीलदार श्योपुर कलों को मध्य प्रदेश भू राजस्व संहिता 1959 की धारा 248 के तहत आवेदन प्रस्तुत कर अतिक्रमकों को निष्काषित करने एवं मंदिर की भूमि का कब्जा पुजारी को दिलाने का निवेदन किया, जिस पर से तहसीलदार श्योपुर ने प्रकरण क्रमांक 2355/1982-83 अ 68 पंजीबद्ध किया तथा सुनवाई उपरांत आदेश दिनांक 28-4-88



पारित करके अतिक्रमणकर्ताओं पर रूपये 1500-1500 अर्थदण्ड अधिरोपित कर बेदखली के आदेश दिये। इस आदेश के विरुद्ध अनुविभागीय अधिकारी श्योपुर कलों के समक्ष अपील होने पर प्रकरण क्रमांक 25/1987-88 अपील में पारित आदेश दिनांक 31-5-88 से अपील अस्वीकार की गई। इस आदेश के विरुद्ध अपर आयुक्त, चंबल संभाग, मुरैना के समक्ष अपील होने पर प्रकरण क्रमांक 228/1988-89 अपील में पारित आदेश दिनांक 31.5.2001 से अपील अस्वीकार की गई। इसी आदेश के विरुद्ध यह निगरानी है।

3/ निगरानी मेमो में उठाये गये बिन्दुओं पर आवेदक एवं अनावेदक क्र-1 के अभिभाषक के तर्क सुने तथा अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख का अवलोकन किया गया। शेष अनावेदकगण सूचना उपरांत अनुपस्थित रहने से एकपक्षीय है।

4/ विद्वान अभिभाषकों के तर्कों पर विचार करने एवं अधीनस्थ न्यायालय के अभिलेख के अवलोकन से यह तथ्य निर्विवाद है कि भूमि सर्वे क्रमांक 237 रकबा 71 बीघा स्थित ग्राम ज्वाड़ तहसील श्योपुर कलों मंदिर श्री बालमुकुन्द जी कस्वा श्योपुर के नाम के स्वामित्व की भूमि है जिसके प्रबंधक तत्समय कलेक्टर मुरैना वर्तमान जिला श्योपुर कलों के कलेक्टर हैं एवं भूमि देवस्थानी माफी/औकाफ विभाग की होकर शासकीय है। जैसाकि आवेदक के अभिभाषक ने बताया कि मंदिर की भूमि पर संहिता की धारा 248 के अंतर्गत प्रकरण नहीं चलाया जा सकता। चूंकि भूमि मंदिर देवस्थानी होकर शासकीय है तथा शासकीय भूमि पर से अतिक्रमण हटायें जाने हेतु संहिता की धारा 248 में प्रावधान है जिसके कारण आवेदक के अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तर्क स्वीकार योग्य नहीं है।

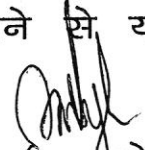


5/ आवेदक के अभिभाषक ने बताया कि तहसीलदार ने आवेदकगण को बचाव प्रस्तुत करने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया है। तहसील न्यायालय के प्रकरण के अवलोकन से स्पष्ट है कि तहसीलदार श्योपुर कलॉ ने अतिक्रमकों को बचाव प्रस्तुत करने हेतु विधिवत् सूचना पत्र जारी किये हैं एवं अतिक्रमणकर्ताओं ने तहसील न्यायालय में उपस्थित रहकर लेखी दस्तावेजों से एवं मौखिक साक्ष्य से बचाव प्रस्तुत किया है। बचाव में अतिक्रमणकर्ताओं ने मंदिर की भूमि पुजारी द्वारा पट्टे पर दिये जाने का सहारा लिया है किन्तु उनके द्वारा तहसीलदार के समक्ष न तो पट्टे की प्रति पेश की है एवं न ही लेखी/मौखिक साक्ष्य से पट्टा दिया जाना प्रमाणित कर सके हैं। ऐसी स्थिति में यह नहीं माना जा सकता कि आवेदकगण को तहसीलदार ने बचाव का पर्याप्त अवसर नहीं दिया।

6/ तहसीलदार के आदेश दिनांक 28-4-1988 के अवलोकन से पाया गया कि तहसीलदार ने मंदिर की भूमि सर्वे क्रमांक 237 रकबा 71 बीघा ग्राम ज्वाड़ पर अतिक्रमण के सम्बन्ध में प्रत्येक दृष्टिकोण से विस्तृत विवेचना उपरांत अतिक्रमण होना पाये जाने से Speaking order बोलता हुआ आदेश पारित किया है जिसके कारण अनुविभागीय अधिकारी श्योपुर कलॉ ने प्रकरण क्रमांक 25/1987-88 अपील में पारित आदेश दिनांक 31-5-88 से एवं अपर आयुक्त चम्बल संभाग मुरैना ने प्रकरण क्रमांक 228/1988-89 अपील में पारित आदेश दिनांक 31.5.2001 में तहसीलदार के आदेश को हस्तक्षेप योग्य नहीं माना है। वैसे भी तीनों अधीनस्थ न्यायालयों के आदेशों के अवलोकन पर उनके द्वारा निकाले गये निष्कर्ष समवर्ती है जिसके कारण विचाराधीन निगरानी में हस्तक्षेप की गुंजायश नहीं है।



7/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर निगरानी सारहीन पाये जाने से निरस्त की जाती है एवं अपर आयुक्त, चंबल संभाग, मुरैना द्वारा प्रकरण क्रमांक 228/1988-89 अपील में पारित आदेश दिनांक 31.5.2001 विधिवत् पाये जाने से यथावत् रखा जाता है।



(एम०के०सिंह)

सदस्य

राजस्व मण्डल

मध्य प्रदेश ग्वालियर

B